Source :->bhajansimran

प्रभु मेरे अवगुण चित ना धरो
समदर्शी प्रभु नाम तिहारो, चाहो तो पार करो

एक लोहा पूजा मे राखत, एक घर बधिक परो |
सो दुविधा पारस नहीं देखत, कंचन करत खरो ||
प्रभु मेरे अवगुण चित ना धरो....

एक नदिया एक नाल कहावत, मैलो नीर भरो |
जब मिलिके दोऊ एक बरन भये, सुरसरी नाम परो ||
प्रभु मेरे अवगुण चित ना धरो...

एक माया एक ब्रह्म कहावत, सुर श्याम झगरो |
अब की बेर मुझे पार उतारो, नही पन जात तरो ||
प्रभु मेरे अवगुण चित ना धरो....

प्रभु मेरे अवगुण चित ना धरो

समदर्शी प्रभु नाम तिहारो, चाहो तो पार करो